ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-55-56**,YEAR-2015

श्रम भक्ति में ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता

❑ वन्दना कुशवाहा

सारांश– *भारत में आरम्भ से ही ग्रामीण महिलायें, परिवार के लिए आजीविका जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है। घर में काम–काज के अलावा खेतों में बुआई – रोपाई, निराई, कटाई और खाद्य डालने जैसे काम करती रही है। इन सब कामों में पुरूषों का बराबर सहयोग प्रदान करती रही है। उनका जीवन सादा और सालीन रहा है। ग्रामीण महिलायें अपना ज्यादातर समय खेतों व अन्य काम करने में बिताती रही है। लेकिन प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में बहुत अन्तर देखने को मिल रहा है। जहां पहले ग्रामीण स्त्रियां केवल सूती साड़ी और सादा श्रंगार करती थी । वही वर्तमान युग में इतना सारा काम होने के बावजूद भी ग्रामीण स्त्रियों अपने साज श्रृंगार में कोई कमी नही रखती है।*

आधुनिकता, वैश्वीकरण और नगरीकरण का सबसे ज्यादा प्रभाव ग्रामीण स्त्रियों के सामाजिक जीवन पर पड़ा है। विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा देश–विदेश की जानकारियों अब ग्रामीण महिलाओं के पास आसानी से मिल जायेगी। ग्रामीण स्त्रियों को दूर से देखने मात्र से ही अपने विचार में यह धारणा बना लेना कि इनका सिद्धान्त सादा जीवन और उच्च विचार है, तो हम गलत होते है। आधुनिकता का प्रभाव भरपूर मात्रा में ग्रामीण महिलाओं पर पड़ा है। उनके खान–पान से लेकर सभ्यता संस्कृति पहनावा साज श्रृंगार सभी क्षेत्रों में देखने को मिल रहा है। ग्रामीण स्त्रियां ग्रामीण महिलाओं की विकासोन्मुखी दिशा प्राप्त हो रही है। किन्तु ग्रामीण महिलाओं को अपने विकास के लिए अत्याधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बुन्देलखण्ड इस इक्कीसवीं सदी के आधुनिक युग में आर्थिक रूप सें पूर्णतः आत्मनिर्भर नही है। गांवों की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है जिसमें महिला पुरूषों की बराबर की साझेदारी होती है। बुन्देलखण्ड की ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता केवल कृषि कार्य में होती है। उनकी आमदनी में नही जिसकी वजह से बुन्देलखण्ड की ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति अत्यन्त सोचनीय है।''आर्थिक मजबूती का सामाजिक हालात से गहरा ताल्लुक होता है।'' ग्रामीण महिलाओं की उन्नति में बाधित होने का एक कारण उन पर घरेलू महिलाओं का लेबल लगाना भी होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का उचित प्रचार प्रसार होने के बावजूद भी ग्रामीण महिलाये पिछड़ी हुई है।

आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और उदारीकरण ने न सिर्फ नगरीय क्षेत्र अपितु ग्रामीण महिलाओं पर भी आपना प्रभाव भरपूर मात्रा में दिख रहे है। उनका प्रभाव कुटीर उद्योग जैसे बीड़ी, पापड़, चटाई, हाथ के पंखें बनाने आदि कामो में ग्रामीण महिलाये दक्ष पायी जाती है। ग्रामीण क्षेत्र में विशेषतः कार्यो के विभिन्न अवसर गरीबी से तंग श्रमिक वर्ग की महिलाओ के हाथ में है। जिनके लिए अस्थायी कार्यक्रम मजदूरी एवं निम्न जीवन स्तर एक सामान्य बात है। गरीबी एवं अभाव ग्रस्तता के कारण शिक्षा एवं प्रशिक्षण की सुविधाओ में इन ग्रामीण महिलाओ की पहुंच संकुचित कर दी है। वास्तव में यह सब उस मानसिकता का फल है। जिसमें पुरूषो की अपेक्षा महिलाओ को अल्पकालिक एवं सामाजिक आर्थिक सहयोग काअवसर प्रदान किया है। घरेलू उत्पादन क्षेत्रों में लाभ कमाने वाले व्यापारिक कार्यो में पुरूषो का प्रभुत्व है। जबकि महिला श्रम का उपयोग गहन तथा लागत हटाने वाले कार्यो तक ही

शोध छात्रा (समाजशास्त्र),म0गा0चि0ग्रा0विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना, (म0प्र0) भारत

सीमित है। इस प्रकार का लैंगिक भेद महिलाओ का अधिक श्रम व कम मजदूरी के क्षेत्रों में ही सीमित है। ग्रामीण महिलाओ में निर्धनता एवं तंगी महिला समाज की एक विकराल समस्या है। ग्रामीण जीवन की परम्परागत मान्यताओ के अनुसार भूमिपति किसान महिलाओ को सार्वजनिक रूप से खेतो खलिहानो तथा सेवा के अन्य विविध क्षेत्रो में कार्य करने की अनुमति नही देता है। उनकी दृष्टि में यह कार्य दलित एवं निर्धन वर्ग की महिलाओ का है जो कम मजदूरी पर आसानी से उपलब्ध हो जाती है। गांवो की दलित महिलाओ को हमेशा निम्नतम श्रेणी का मजदूरी कार्य सौपा जाता है। चाहे वह कृषि कार्य हो अथवा निर्माण कार्य हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1—कौली सोनोवाल रीना (2011) ग्रामीण महिला शसक्तिकरण (कुरूक्षेत्र सितम्बर)

2—डॉ0 कान्ता मीना (2009) जनजातीय महिला विकास एक सामाजिक विवेचना

3— भदौरिया, उदारता (2010) ''बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य, नारी की दशा एवं दिशा'' ए जर्नल ऑफ सोशल फोकस, औरैया

4— राहैला, डा0 सत्यपाल, (1973) भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन उत्तर प्रदेश हिन्दू ग्रन्थ अकादमी लखनऊ

5— कौशिक, सुशीला (2000) ''महिला सशक्तिकरण के विविध पक्ष'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर

6— सिंह, अनुपमा (2010), ''नारी कल, आज और कल'' एजर्नल ऑफ सोशल फोकस, औरैया उ0प्र0

7— भदौरिया, उदारता (2010) ''बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य, नारी की दशा एवं दिशा'' ए जर्नल ऑफ सोशल फोकस, औरैया

*****